

13. कर्तव्य - परायणता

- कन्हैया लाल मिश्र प्रभाकर

ज़फर मियां एक दिलचस्प आदमी हैं, मेरा बहुत लिहाज़ करते हैं। उस दिन जब मैं उनके सैलून में पहुँचा, तो वे एक आदमी की हजामत बना रहे थे और आरा चलाने वाले दो मज़दूर इन्तज़ार में बाहर बैठे थे।

मेरे दुकान में पहुँचते ही ज़फर मियां ने उस्तरा रख दिया। मेरे लिए उन्होंने कुर्सी लगाई और बाहर की दुकान से चाय का एक प्याला लाकर मुझे दिया। मैं चाय पीने लगा और ज़फर मियां फिर हजामत बनाने लग पड़े।

हजामत निपटी तो मुझे लगा कि मेरा नम्बर है, पर ज़फर मियां ने उन मज़दूरों में से एक को बुला लिया और उसके बाल काटने लगे। तभी उनका असिस्टेंट आ गया और वह दूसरे मज़दूर की हजामत बनाने लग गया।

अब मैं बैठा हूँ कुर्सी पर और देख रहा हूँ कि मियां ज़फर उस मज़दूर के बाल काट रहे हैं। मैं मज़दूर को देखता हूँ - यह शायद पांच-सात दिन से नहीं नहाया है। उसके बालों में रेत भरी है और, बुरादा भी। उसकी गर्दन काली चीकट हो रही है और तो और, मुँह पर भी धूल है। पर ज़फर साहब बड़ी लग्न से उसके बाल काट रहे हैं, जैसे यह मज़दूर नूरजहां का सगा भाई हो।

कभी कंधे से नापते हैं, कभी कैंची से, और फिर फुरक-फुरक दो-चार कैंची मारते हैं। मैं देख रहा हूँ ज़फर बालों में इतने लीन हैं कि उन्हें याद नहीं कि मैं भी यहां बैठा हूँ और उन्हें मेरे बाल भी काटने हैं। वह बालों की कटाई को अपने ज्ञान और कला की चरम सीमा तक पहुंचाना चाहते हैं। उनका ध्यान इस पर नहीं कि यह मज़दूर इस कारीगरी को नहीं समझ सकता। वे यह भी नहीं सोचते कि इस मज़दूर की स्थिति ऐसी नहीं है कि वह इन बालों को ठीक रख सके।

मैं सोच रहा हूँ सम्भवतः यह मज़दूर हजामत के बाद आज नहायेगा और बालों में तेल डाल कंघा करेगा पर कल इनमें फिर यहीं धूल और बुरादा भर जाएगा और ये ऐसे ही उलझ जाएंगे जैसे आज उलझे हुए हैं।

मैं यह सोच रहा हूँ, पर इनमें से कोई भी यह बात नहीं सोच रहे हैं। वे अपनी धुन में हैं। वे कंघा चलाते हैं, पर वह नहीं चलता-उलझे बालों में अटक जाता है। ज़फर मियां बाल सुलझाते हैं और कंघा बढ़ाते हैं। कभी वह झुककर बालों का मिलान देखते हैं, कभी उभारकर कभी इधर और कभी उधर। एक-एक बाल पर, एक-एक ढलान पर, एक-एक मिलान पर ज़फर की निगाह है, जैसे कोई इंजीनियर किसी पुल के खम्बे का मिलान देख रहा हो।

यों कटिंग पूरी हुई तब कैंची बार-बार ताल के साथ खाली हो चुकर-चुकर चला, ज़फर ने कहा - "लो सरकार, कट गए आपके बाल।"

अब उन्होंने उठाया ब्रुश और जुटे हजामत पर। हजामत में भी वहीं तल्लीनता। एक हाथ सीधा, तो एक उल्टा और तब यह देखभाल कि कहीं कोई कील तो नहीं रह गयी। कील ही नहीं, कलम से लेकर मूंछों की छंटाई तक के काम उन्होंने पूर्ण सुन्दरता से किए।

बीस मिनट से ज्यादा मैं ज़फर की इस तल्लीनता को देखता रहा। सच यह है कि ज़फर उस मज़दूर के बालों में लीन थे और मैं ज़फर में। देखते-देखते मैं भावों से भर उठा था, यहां तक कि हजामत की ऊँची कुर्सी पर आने को जब मैं उठा तो इतना भाव-विभोर था कि मैंने ज़फर को अपने में दबोच लिया।

पैसे देकर जब वह मज़दूर चला गया तो मैंने कहा - “ज़फर मियां। तुम तो उस मज़दूर को ऐसे लिपटे कि जैसे ज़िले का कलक्टर ही तुम्हारी दुकान पर आ बैठा हो।”

ज़फर ने वो जवाब दिया उससे आगरे का पेठा और दिल्ली का सोहन हलवा दोनों फीके पड़ गए। बोले, “बाबू जी, मेरे लिए तो जो इस कुर्सी पर बैठता है, वही कलक्टर है।”

मैं स्मृतियों की सरिता में तैरने लगा। ज़फर मियां अपना काम पूरा कर चुके। ‘लो सरकार, बन गयी हजामत,’ उन्होंने कहा, तो मैं चौक पड़ा। पर यह क्या। मैं इधर उठ रहा हूँ उस कुर्सी से और उधर मेरे सामने उतरी जा रही है जीवन वेद की यह ऋचा -

“हर एक नागरिक में अपने काम के लिए यह चाव, श्रम के प्रति यह श्रद्धा और पेशे के प्रति ईमानदारी के इस भाव का जागरण ही राष्ट्र की जीवन शक्ति का सर्वोत्तम मापदण्ड है।”

अभ्यास

1. ज़फर मियां जिस मज़दूर के बाल काट रहे थे उसका व्यक्तित्व कैसा था ?
2. ज़फर मियां की अपने कार्य में तल्लीनता स्पष्ट कीजिए।
3. ज़फर मियां की तल्लीनता का लेखक पर क्या प्रभाव पड़ा ?
4. लेखक के अनुसार जीवन वेद की ऋचा क्या है ?

